International Journal of Education and Science Research Review

E-ISSN 2348-6457

Volume-4, Issue-3 June - 2017 P-ISSN 2349-1817

www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

महात्मा गाँधी जी के शिक्षा–दर्शन का मूल्यांकन

डॉ0 मनोरमा राय,

विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग

धर्मेन्द्र सिंह मैमोरियल कॉलिज, अटौला, मेरठ

सार

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का व्यक्तित्व और कृतित्व आदर्शवादी रहा है। उनका आचरण प्रयोजनवादी विचारधारा से ओतप्रोत था। संसार के अधिकांश लोग उन्हें महान राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रूप में जानते हैं। पर उनका यह मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का एक मत्वपूर्ण योगदान होता है। अतः गांधीजी का शिक्षा के क्षेत्र में भी विशेष योगदान रहा है। उनका मूलमंत्र था – 'शोषण–विहीन समाज की स्थापना करना'। उसके लिए सभी को शिक्षित होना चाहिए। क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ समाज का निर्माण असंभव है। अतः गांधीजी ने जो शिक्षा के उद्देश्यों एवं सिद्धांतों की व्याख्या की तथा प्रारंभिक शिक्षा योजना उनके शिक्षादर्शन का मूर्त रूप है। अतएव उनका शिक्षादर्शन उनको एक शिक्षाशास्त्री के रूप में भी समाज के सामने प्रस्तुत करता है। उनका शिक्षा के प्रति जो योगदान था वह अद्वितीय था।

प्रस्तावना

संसार के प्रायः अधिकांश लोग गाँधी जी को एक महान राजनीतिज्ञ ही मानते हो, परन्तु उन्होंने देश की राजनीतिक उन्नति की अपेक्षा सामाजिक उन्नति को अधिक आवश्यक समझा। उनका विश्वास था कि दूषित समाज में किसी आदर्श राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती है। अतः उन्होंने राजनीतिक क्रान्ति के साथ–साथ सामाजिक क्रान्ति को भी जन्म दिया। जिसमें शिक्षा का प्रमुख स्थान था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा योजना उनके शिक्षा–दर्शन का मूर्त रूप थी। इस शिक्षा का उद्देश्य भारतीय जनता के हृदय तथा मन को पवित्र करके एक शोषण विहीन समाज की स्थापना करना था। इस दृष्टि से गाँधी जी एक महान शिक्षा–शास्त्री भी थे। डॉ० एम.एस. पटेल ने ठीक ही लिखा है– ग्रीन का कथन था पेस्टोलॉजी वर्तमान शिक्षा–सिद्धान्त तथा व्यवहार का प्रारम्भिक बिन्दु था। यह बात पाश्चात्य शिक्षा के सम्बन्ध में सही हो सकती है। गाँधी जी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का निष्पक्ष अध्ययन इस बात को सिद्ध करता है कि वे पूरब में शिक्षा सिद्धान्त और व्यवहार के प्रारम्भिक बिन्दु हो। गाँधी जी का शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय देन है। वे सर्वोदयी सिद्धान्त के प्रतिपादक हैं। ये मनुष्य मनुष्य में भेद नहीं करते थे। ये वर्ग प्रधान समाज के स्थान पर वर्गहीन समाज की स्थापना करना चाहते थे और इस कार्य में वह काफी सफल हुए। उन्होंने सर्व–प्रथम दक्षिण अफ्रीका में गोरे काले के भेद को समाप्त करने के लिए आन्दोलन किया और उसके बाद भारत में जन्म आधारित ऊँच–नीच की वर्ण–व्यवस्था को समाप्त करने के लिए आन्दोलन किया। इनके प्रयास से भारत में जन्म आधारित वर्ण व्यवस्थाओं के स्थान पर वर्ग विहिन समाज की स्थापना हुई, यह बात दूसरी है कि वोट की राजनीति करने वालों ने वर्णभेद के स्थान पर वर्ग भेद का पौधा रोप दिया है जो राष्ट्रीय एकता में बड़ा बाधक है। गाँधी जी ने धर्म संकीर्णता के स्थान पर सर्वधर्म सम्भाव के लिए प्रयत्न किया। इसका भी दूरगामी प्रभाव पड़ा। यदि वोट की राजनीति करने वाले धार्मिक संकीर्णता को पानी न देते तो आज देश का नक्शा ही कुछ और होता।

गाँधी जी युग पुरूष थे, इनका प्रभाव न केवल भारत तक सीमित रहा अपितु अन्य देशों पर भी पड़ा। आज पूरा संसार वर्गविहीन समाज की स्थापना की और अग्रसर है। और सभी धर्म की संकीर्णता के दायरे से निकलकर मानव धर्म के विस्तृत दायरे में प्रवेश करने के लिए आतुर है। शिक्षा के क्षेत्र में गाँधी जी का प्रभाव पड़ा। अपने देश भारत में सामान्य अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की ओर कदम बढ़े। साथ ही प्रौढ़ शिक्षा की व्यवस्था में भी तेजी आयी। जहाँ तक गाँधी जी द्वारा प्रस्तावित बेसिक शिक्षा की बात है, स्वतंत्र होने के पहले ही यह कई प्रान्तों में लागू कर दी गई थी। स्वतंत्र होने के बाद तो यह सभी प्रान्तों में लागू कर दी गई थी। देखते–देखते समस्त प्राथमिक विद्यालयों पर बेसिक प्राइमरी विद्यालय के बोर्ड लग गये। पाठ्यचर्या में बेसिक क्राफ्टों पर बल और इस सबके लिए सरकार से सामग्री और धन। समवाय विधि से कैसे पढ़ाया जाय इस पर आये दिन वर्कशापों का आयोजन पर हाथ कुछ भी न लगा। न इससे बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास हुआ और न नैतिक एवं चारित्रिक विकास। इसके द्वारा

बच्चों को अपनी रोजी–रोटी कमाने योग्य भी नहीं बनाया जा सका वर्णभेद मिटाने की बात तो दूर रही। इससे वर्ग भेद और बढ़ा। यह निम्न कोटि की शिक्षा मानी गई और इसे प्राप्त करने वाले भी निम्न कोटि के माने गये और सच बात भी यही है कि यह निम्न कोटि की ही साबित हुई। इसके द्वारा गाँधी जी का एक भी स्वप्न साकार नहीं किया जा सका। हाँ गाँधी जी द्वारा स्थापित गुजरात पीठ (अहमदाबाद) और हिन्दुस्तानी तालीम शिक्षा केन्द्र (सेवाग्राम) आज भी इनके आदेशों के मूर्त रूप हैं। और वहाँ एक ओग ग्राम सुधा के कार्यक्रम चलते हैं तो दूसरी और आत्मबोध के कार्यक्रम चलते हैं पर इस प्रकार की शिक्षा से राष्ट्र का आर्थिक विकास सम्भव नहीं है। आज आवश्यकता है जीवन के किसी भी क्षेत्र में दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि गाँधी जी ने भारतीय शिक्षा को भारतीय बनाने का नारा बुलन्द किया, उसके उद्देश्य विस्तृत किए, और उसकी पाठ्यचर्या विस्तृत की। उन्होंने शिक्षण की प्राचीन विधियों के प्रयोग में बच्चों की सक्रिय साझेदारी पर बल देकर उन्हें उपयोगी बनाया और साथ ही शिक्षण की सह–सम्बन्ध विधि पर जोर दिया। अनुशासन के सम्बन्ध में उनका यह विचार कि– यह आत्मप्रेरित होना चाहिए और बच्चों में इसके विकास के लिए प्रभावात्मक विधि को अपनाना चाहिए आज सभी शिक्षा शास्त्रियों को मान्य है शिक्षक के सम्बन्ध में इनके विचार कुछ अट–पटे अवश्य लगते हैं परन्तु इनकी यह बात तो सभी स्वीकार करते हैं कि शिक्षक को समाज का आदर्श व्यक्ति होना चाहिए। शिक्षार्थी को बह्मचर्य पालन के उपदेश की महत्ता को भी सभी स्वीकार करते हैं। हाँ विद्यालयों के सम्बन्ध में गाँधी जी का पहला विचार कि ये आर्थिक दृष्टि से आत्म निर्भर होने चाहिए, कोरी कल्पना की बात है, पर इनकी दूसरी बात पर तो सभी सहमत हैं कि ये सामुदायिक केन्द्र के रूप में विकसित होने चाहिए।

गाँधी जी का शिक्षा दर्शन

गाँधीजी महान शिक्षा–दार्शनिक भी थे। शिक्षा और दर्शन में गहरा सम्बन्ध है। अनेकों महान शिक्षाशास्त्री स्वयं महान दार्शनिक भी रहे हैं। इस सह–सम्बन्ध से दर्शन और शिक्षा दोनों का हित सम्पादित हुआ है। शैक्षिक समस्या के प्रत्येक क्षेत्र में उस विषय के दार्शनिक आधार की आवश्यकता अनुभव की जाती है। फिहते अपनी पुस्तक ''एड्रेसेज टु दि जर्मन नेशन'' में शिक्षा तथा दर्शन के अन्योन्याश्रय का समर्थन करते हुए लिखते हैं – ''दर्शन के अभाव में 'शिक्षण–कला' कभी भी पूर्ण स्पष्टता नहीं प्राप्त कर सकती। दोनों के बीच एक अन्योन्य क्रिया चलती रहती है और एक के बिना दूसरा अपूर्ण तथा अनुपयोगी है।'' डिवी शिक्षा तथा दर्शन के संबंध को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि दर्शन की जो सबसे गहन परिभाषा हो सकती है, यह है कि ''दर्शन शिक्षा–विषयक सिद्धान्त का अत्यधिक सामान्यीकृत रूप है।'' दर्शन जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है, इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शिक्षा उपाय प्रस्तुत करती है। दर्शन पर शिक्षा की निर्भरता इतनी स्पष्ट और कहीं नहीं दिखाई देती जितनी कि पाठ्यक्रम संबंधी समस्याओं के संबंध में। विशिष्ट पाठ्यक्रमीय समस्याओं के समाधान के लिए दर्शन की आवश्यकता होती है। पाठ्यक्रम से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ प्रश्न उपयुक्त पाठ्यपुस्तकों के चुनाव का है और इसमें भी दर्शन सन्निहित है। जो बात पाठ्यक्रम के संबंध में है, वही बात शिक्षण–विधि के संबंध में कही जा सकती है। लक्ष्य विधि का निर्धारण करते हैं, जबकि मानवीय लक्ष्य दर्शन का विषय हैं। शिक्षा के अन्य अंगों की तरह अनुशासन के विषय में भी दर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका है। विद्यालय के अनुशासन निर्धारण में राजनीतिक कारणों से भी कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण कारण मनुष्य की प्रकृति के संबंध में हमारी अवधारणा होती है। प्रकृतिवादी दार्शनिक नैतिक सहज प्रवृत्तियों की वैधता को अस्वीकार करता है। अतः बालक की जन्मजात सहज प्रवृत्तियों को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्ति के लिए छोड़ देता हैय प्रयोजनवादी भी इस प्रकार के मापदण्ड को अस्वीकार करके बालक व्यवहार को सामाजिक मान्यता के आधार पर नियंत्रित करने में विश्वास करता हैय दूसरी ओर आदर्शवादी नैतिक आदर्शों के सर्वोपरि प्रभाव को स्वीकार किए बिना मानव व्यवहार की व्याख्या अपूर्ण मानता है, इसलिए वह इसे अपना कर्त्तव्य मानता है कि बालक द्वारा इन नैतिक आधारों को मान्यता दिलवाई जाये तथा इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाए कि वह शनैःशनैः इन्हें अपने आचरण में उतार सके। शिक्षा का क्या प्रयोजन है और मानव जीवन के मूल उद्देश्य से इसका क्या संबंध है, यही शिक्षा दर्शन का विजिज्ञास्य प्रश्न है। चीन के दार्शनिक मानव को नीतिशास्त्र में दीक्षित कर उसे राज्य का विश्वासपात्र सेवक बनाना ही शिक्षा का उद्देश्य मानते थे। प्राचीन भारत में सांसारिक अभ्युदय और पारलौकिक कर्मकांड तथा लौकिक विषयों का बोध होता था और परा विद्या से निःश्रेयस की प्राप्ति ही विद्या के उद्देश्य थे। अपरा विद्या से अध्यात्म तथा रात्पर तत्व का ज्ञान होता था। परा विद्या मानव की विमुक्ति का साधन मान जाती थी। गुरुकुलों और आचार्यकुलों में अंतेवासियों के लिये ब्रह्मचर्य, तप, सत्य व्रत आदि श्रेयों की प्राप्ति परमाभीष्ट थी और तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला आदि विश्वविद्यालय प्राकृतिक विषयों के सम्यक् ज्ञान के अतिरिक्त नैष्ठिक शीलपूर्ण जीवन के महान उपस्तंभक थे। भारतीय शिक्षा दर्शन का आध्यात्मिक धरातल विनय, नियम, आश्रममर्यादा आदि पर सदियों तक अवलंबित रहा।

निष्कर्ष

जन शिक्षा और स्त्री शिक्षा के सन्दर्भ में गाँधी जी के विचार और कार्य दोनों ही बड़े अमूल्य हैं। इसके लिए यह देश इनका चिर ऋणी रहेगा। गाँधी जी के शैक्षिक विचारों के सम्बन्ध में श्री एम०एस० पटेल ने कहा है कि– ''गाँधी जी का शिक्षा दर्शन अपनी योजना में प्रकृतिवादी, उद्देश्यों में आदर्शवादी और अपनी कार्य पद्धति में प्रयोजनवादी हैं।'' आदर्शवाद गाँधी दर्शन का आधार है तथा प्रकृतिवाद एवं प्रयोजनवाद उसके सहायक हैं। गाँधी के शिक्षा–दर्शन को हम आदर्शवादी इसलिए कह सकते हैं क्योंकि वह जीवन के अन्तिम लक्ष्य सत्य को प्राप्त करने की प्रेरणा प्रदान करता है। प्रकृतिवादी इसलिए कह सकते हैं क्योंकि वह बालक को उनकी प्रकृति के अनुसार विकसित करना चाहता है, तथा प्रयोजनवादी इसलिए कह सकते हैं क्योंकि वह बालक को उसकी रूचि के अनुसार क्रिया करके सीखाने पर बल देता है। जिससे पाठ्यक्रम के सभी विषयों में समन्वय तथा एकीकरण स्थापित हो सके डा० एम०एस० पटेल ने भी इसी आशय की पुष्टि करते हुए लिखा है– दार्शनिक के रूप में गाँधी जी की महानता, इस बात में है कि उनके शिक्षा दर्शन में प्रकृतिवाद, आदर्शवाद और प्रयोजनवाद की मुख्य प्रवृत्तियां अलग और स्वतन्त्र नहीं हैं वरन वे सब मिल–जुलकर एक हो गयी हैं। जिससे ऐसे शिक्षा– दर्शन का जन्म हुआ है जो आज की आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त होगा तथा मानव आत्मा की सर्वोच्च आकांक्षाओं को सन्तुष्ट करेगा। परन्तु पटेल साहब से पूर्णतः सहमत नहीं हुआ जा सकता है। पहली बात तो यह है कि महात्मा गाँधी पर इन पाश्चात्य दर्शनों का कोई प्रभाव नहीं था दूसरी बात यह है कि ये मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा तीनों के विकास पर समान बल देते थे। अब यदि इनके कोई विचार किन्हीं पाश्चात्य दर्शनों से मेल खाते हैं तो उनके आधार पर इन्हें उन दर्शनों से जोड़ना युक्ति संगत नहीं है, गाँधी जी ने भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार की उन्नति के लिए जिस एकादश व्रत के पालन की शिक्षा दी है और सत्य एवं अहिंसा पर आधारित जो शिक्षा योजना प्रस्तुत की है वह भारतीय दर्शन की पृष्ठभूमि पर ही तैयार की है, वह हर दृष्टि से भारतीय दर्शन पर आधारित है। इस युग–पुरूष को हमारा शत्–शत् प्रणाम्।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. लाल, रमन बिहारी : पन्द्रहवाँ संस्करण "शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार" रस्तोगी पब्लिकेशन्स, शिवाजी रोड, मेरठ–250002, 2003
2. लाल, रमन बिहारी व सुनीता पलोड : प्रथम संस्करण, "शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग", आर0लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ–250001, 2015
3. मित्तल, एम0एल0 : "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", इन्टरनैशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ–250001, 2016
4. माथुर, एस0 एस0 : "शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार", विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–282002, 2017
5. ऑबेराय, सुरेश चन्द्र : "शिक्षा तकनीकी के तत्व एवं प्रबन्धन", आर0 लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलेज ,मेरठ–250001, 2015
6. पाठक, पी0डी0 व जी0एस0डी0त्यागी : "शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त", विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–282002, 2009
7. पाण्डेय आर0 एस0 : "भारतीय शिक्षा के विभिन्न आयाम" विनाद पुस्तक मन्दिर, आगरा–282002, 2014
8. पचौरी गिरीशः : प्रथम संस्करण, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक" इन्टरनैशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ–250001, 2016
9. राठौर, कुसुम लता : प्रथम संस्करण, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", आर0लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ–250001, 2012
10. शर्मा, आर0 ए0 : "पाठ्यक्रम विकास एवं अनुदेशन", आर0 लाल बुक डिपो निकट राजकीय इण्टर कॉलेज मेरठ–250001, 2011